

Navapadyasuratnamala

——
नवपद्यसुरतमाला

——
Document Information



Text title : Navapadyasuratnamala
File name : navapadyasuratnamALA.itx
Category : deities_misc, gurudev
Location : doc_deities_misc
Author : shrInidhiyati
Transliterated by : Krishnananda Achar
Proofread by : Krishnananda Achar
Description/comments : PanchayatistutiH
Acknowledge-Permission: C Narayanarao
Latest update : June 15, 2020
Send corrections to : sanskrit@cheerful.com


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 15, 2020

sanskritdocuments.org



Navapadyasuratnamala

नवपद्यसुरतमाला



श्रीकान्ततीर्थ गुरुराज कराञ्जित
श्रीनिधिर्यतिरुदार गुणोल्लसन्तीम् ।
श्रीपादराज नवपद्य सुरतमालां
भक्त्या करोमि गुरुराज वरप्रसादात् ॥ १ ॥

श्रीपूर्णाबोधकुलवार्धिसुधाकराय
श्रीव्यासराजगुरवे यतिशेभराय ।
श्रीरङ्गविह्वलपदाम्भुज भम्भराय
श्रीपादराज गुरवेस्तु नमश्चुभाय ॥ २ ॥

सम्पूरिताम्बिल जनोरु मनोरथाय
श्रीमन्सिद्धसरसीतट संस्थिताय ।
श्रीमत्सुवार्णवार्णसमवर्ण कराञ्जिताय
श्रीपादराजगुरवेस्तु नमश्चुभाय ॥ ३ ॥

श्रीव्यासराज कृष्णिबन्ध निवारकाय
तद्भाषयैव कृष्णिराज सुतोषकाय ।
श्रीमत्सुरत भयितोज्ज्वल कुण्डलाय
श्रीपादराज गुरवेस्तु नमश्शुभाय ॥ ४ ॥

श्रीगोपिकापति निवेदित षष्टिशाक-
मुष्योरु भोजन विदूषण तत्पराणाम् ।
सन्दर्शितोरु निजकुक्षिगताद्र्शाकान्
श्रीपादराज गुरवेस्तु नमश्शुभाय ॥ ५ ॥

श्रीमद्यतीश रघुनाथ मुनेर्विमानात्
पुष्पे स्वमूर्द्धिप्रतति प्रसमीक्ष्ययोक्ता ।
संप्रेरितोरु रघुनाथ मुनीश्वराय
श्रीपादराज गुरवेस्तु नमश्शुभाय ॥ ६ ॥

शङ्खस्थितेन पयसा द्विजघातपापे
दूरीकृते षड्जनेषु वि शङ्कितेषु ।
तेनैव शुद्धमविनातिपटिच्छराय
श्रीपादराज गुरुवेस्तु नमश्शुभाय ॥ ७ ॥

श्रीमन्नसिंहसरसी पयसि प्रमोदा-
ध्यायामि तिष्ठ सरसी शुभकारि तीरे ।
स्वप्नेनिर्बोधे नगिनी जयदक्षगाभूत्
श्रीपादराज गुरुवेस्तु नमश्शुभाय ॥ ८ ॥

दुर्वादिवारण विदारण दीक्षिताय
श्रीमद्रमेशचरणारण्यगुडाश्रयाय ।
व्याभ्यानिनाद रुचिरोरु मृगाधिपाय
श्रीपादराज गुरुवेस्तु नमश्शुभाय ॥ ९ ॥

कस्तूरिकादि समलङ्कृत दिव्यदेहं
दृष्ट्वाविदूषयति मूढजने क्षणेन ।
तत्यागधारित तनूः परिरक्षकाय
श्रीपादराज गुरुवेस्तु नमश्शुभाय ॥ १० ॥

श्रीपादराज नवपद्य सुरत्नमालां
येधारयन्त्यनुदिनं भुविशुद्धभावाः ।
वृन्दावनस्य पुरतस्सकलेष्टदश्च
श्रीपादराजगुरुराज लृट्जवासी ॥ ११ ॥

इति श्रीनिधितिविरचिता नवपद्यसुरत्नमाला समाप्ता ।

Encoded and proofread by Krishnananda Achar

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

